ISSN No. 2231-0045 VOL.II* ISSUE-I*AUGUST-2013
Periodic Research

संत कबीरदास एवं गुरुनानक का सामाजिक चिंतन

ममता सहगल
सहायक प्राध्यापक,
श्री गुरूनानक महिला महाविद्यालय
जबलपुर (म.प्र.)

सारांश

हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल की प्रारंभिक व्यवस्था को अत्यधिक प्रभावित करने वाले संतों में कबीर और गुरूनानक का प्रमुख स्थान है। इन्होनें व्यक्ति साधना के साथ ही सामाजिक चिंतन को भी अत्यधिक प्रभावित किया है। इन दोनों संतों ने पंडितों, मौलवियों तथा राजदरबारों के आदेशों की परवाह न करते हुए जन–जीवन म आत्म चेतना के बल पर एक नए विश्वास का संचार किया था। इन्होंनें मानव समाज में जातिवाद एवं सम्प्रदायवाद की कटु आलोचना करते हुए परस्पर प्रेम एवं सौहार्द स्थापित करने का अथक प्रयत्न किया था।

मुख्य शब्द : साम्पदायवाद, भक्तिकाल

प्रस्तावना

इन संतों के साहित्य अनगढ़ भाषा, समाजसुधार, क्रांतिकारी विचार एवं आध्यात्मिक रहस्यानुभूतियों पर समय–समय पर साहित्य मर्मज्ञों ने गंभीरता पूर्वक विचार मंथन किया है । उपर्युक्त दोनों संतों ने भारतीय दर्शन एवं साहित्य पर अपनी अमिट छाप छोड़ी है। यही कारण है कि उनके नाम पर क्रमशः कबीर पंथी एवं सिख पंथी परम्परा का प्रादुर्भाव हुआ। उक्त महात्माओं के दार्शनिक सिद्धान्तों का विश्लेषण करते हुए आज के बुद्धिवादी एवं वैज्ञानिक युग में उनकी उनकी प्रासंगिकता पर विचाररत है।

दोनों हो संतो के आगमन के समय वर्ण भेद, ब्राह्मणों की सर्वोच्चता, शूद्रों की दुर्दशा, अन्याय, भ्रष्टाचार एवं रिश्वतखोरी, समाज में नारी की दुर्दशा, कुरूतियों का बोलबाला था। इसके अलावा मुगल सम्राटों के अत्याचार, सुल्तानों की विलासप्रियता, पर्दा प्रथा की बहुलता, हिंदुआ के जीवन में दारिद्रय एवं निराशा तथा दास प्रथा जैसी राजनीतिक परिस्थितियाँ समाज को अपने शिकंजे में घेरी हुई थी।

यदि हम मध्ययुग की धार्मिक पृष्ठभूमि पर नजर डालें तो सनातन हिंदू धर्म में अवतारवाद एवं मूर्तिपूजा ने भारत में अपना स्थान बनाया।

मध्य युग की दार्शनिक पृष्ठभूमि का आधार आचार्य शंकर का अद्वैत वेदांत दर्शन, स्वामी रामानुजाचार्य एवं उनका विशिष्टा द्वैतवाद, मध्वाचार्य एवं उनका द्वैतवादी सिद्धांत, निंबर्काचार्य एवं उनका द्वैतावाद विष्णुस्वामी एवं उनका शुद्धाद्वैत वाद आदि थे।

इसके अलावा पतंजलि का योग दर्शन, सूफी मत और इस्लाम धर्म आदि मत समाज में थे।

कबीर का व्यक्तिवः–

मध्यकालीन संतों एवं भक्तों में कबीर जी निर्भीक, स्पष्टवादी, अक्खड़ मस्तमौला, अदम्य साहसी, निरभिमान, महान भक्त, संत, विलक्षण बुद्धि संपन्न, क्रांतिकारी, समाज सुधारक मानवीय एकता के कवि थे। उन्होंने समाज में व्याप्त धार्मिक अंधविश्वासो एवं परम्परागत रूढ़ियों पर प्रहार करते हुए प्रचलित धार्मिक पाखण्ड एवं कुरीतियों को दूर करने का सफल प्रयास किया। डॉ. तारकनाथ बोली ने कहा है ''कबीर ने जो कुछ मूल्यांकन किया था, सबको आत्मसात् किया, उसमें अपनी अनुभूति की सुगन्ध का संचार किया, उसे अपनी प्रतिभा की किरणों से रंजित किया और भारतीय संस्कृति के विकास की श्रंखला में एक सुरभित स्वर्णिम कड़ी जोड़ दी जिसके पीछे क्रांतिमान कंडियों की लड़ियों बँधती हुई चली गयी। कबीर ने जीवन के सभी स्तरों में क्रांति के रमणीय बीज बोये, उन्होने सीचा और पल्लवित किया। इन बीजों से अनेक विराट वृक्षों का जन्म हुआ। जिसकी अनुभूति की छाया में आज भो अनेक पथ भ्रष्ट आत्माएँ आलोक की किरणें फटती देखी है।''

कबीर का जन्म ऐसे सघ"र्मिय समय में हुआ था जब देश में सामाजिक दृष्टि के पतन का काल था। कबीर ने अपनी वाणी के माध्यम से समाज में व्याप्त कुरितियों, वैमनस्य, कुप्रथायें पारस्परिक द्वेष, आडंबर, हिंसा, पापाचार,

भेदभाव, छूआछूत, वर्णभेद, मिथ्याचार, धर्म के स्थान पर बाह्याचार अंध –विश्वास के प्रति करारा व्यंग्य किया तथा समाज को श्रेष्ठ बनाने का पूर्णतः प्रयास किया।

कबीर का मूल उद्देश्य लोक कल्याण तथा समाज सुधार था। कबीर का मुख्यतः समाज सुधारक रूप ही अधिक मुखर रहा है। उन्होनें समाज में व्याप्त बुराईयों के अनेक चित्र प्रस्तुत किए है। डॉ. सरनाम सिंह शर्मा ने लिखा है– ''उनकी वाणी समाज के रंगीन चित्र प्रस्तुत करती है, एक नहीं अनेक, केवल रेखाचित्र हीं नहीं, सरल रंगीन चित्र भीः इन चित्रों में कबीर का संपूर्ण युगीन समाज अपने सच्चे जीते जागते रूप में साकार हो उठा है। यह और बात है कि उसके कुरूप पक्ष पर भी कबीर का ध्यान केन्द्रित रहा है इसका मुख्य कारण सम्भवतः समयुगीन समाज की परिस्थितियाँ थी। कबीर ने न ही कोई ग्रंथ लिखा और न ही किसी संस्था की स्थापना की। उन्हानें जो जीवन अपनी आँखों से देखा, भोगा उसे अपनी वाणी के माध्यम से जन–साधारण तक पहुँचाया।

कबीर का किसी व्यक्ति, जाति, धर्म या समुदाय से कोई द्वेष नहीं था। उन्हानें सब सन्तों के समान ही जाँत– पाँत के भेदभाव को महत्व नहीं दिया। उनके अनुसार आत्मा की कोई जाति नहीं है और सब जीव उस परम परमात्मा से ही उत्पन्न हुए है, न कोई निम्न है और न ही कोई उच्चः

एक जाति थे सब उतपनाँ, कौन बाँम्हन कौन सूदा।।

कबीर ग्रथावली पृ.82

संत कबीर ने निर्गुण, निराकार ईश्वर की भक्ति पर बल दिया है। उन्होने अवतारवाद तथ बहुदेवोपासना का विरोध किया है। उन्होंने ईश्वर को अक्षय पुरूष कहा है तथा निरंजन उसकी डाली को बताते हुए (त्रिदेव) ब्रह्मा, विष्णु और महेश को उसकी शाखाएँ घोषित की है–

अक्षय पुरूष इक पेड़ है, निरंजन बाकी डार।
त्रिदेवा शाखा भये पात भाय संसार ।।

समय – समय पर कबीर ने अपनी वाणी के माध्यम से विपरीत और वि"ाम परिस्थितियों में भी लोगों का मार्गदर्शन किया। आडंबर चारियों के वि"ाय में कबीर कहते हैं ये लोग जो आडंबर रचते हैं वे स्वय सत्य ज्ञान से मीलों दूर होते हैं। माथे पर तिलक लगाकर, कानों में मोटे–मोटे कुंडल धारण करके मन को स्वतंत्र रखकर तथा सिर पर जटा लगाने, शरीर को कष्ट देनें से कोई योगो नहीं बन जाता है। योगी तो वही है जिसने तन तथा मन दोनों को अपनें वश में कर लिया हो। पाखंड और आडंबर रचने वाले साधु वास्तव में धूर्त है। वह अपने आडंबरों की आड़ में जनता को ठगते हैं। एसे 'धूर्त' साधु–समाज साधु वेश और साधु–धर्म कों अपमानित करते ह। धूर्त तथा कपटी साधु के विषय में वे कहते हैं–

मन मैला तन उजरा, बगुला कपटी अंग ।
ता सौं तो कौवा भला तन–मन एकहि अंग।

हिन्दू ही नहीं, मुसलमानों के बह्मचार पर भी उन्हानें तीखा प्रहार किया है। मुसलमानों के सुन्नत, बाँग, करबानी आदि की उन्होने खरी आलोचना की है। काजी का किताब (कुरान) पढ़ते–पढ़ते जीवन व्यतीत हो गया किन्तु वह उसके मर्म को नहीं जानता–

काजजी कौन कतेब बखाने,
पढ़त–पढ़त केते दिन बीते, गति एक नहीं जाने।
सकति से नेह पकरि करि सूनति यह न बूंद रे भाई
जोर खुदाई तुरक मोहि करता ता आपे करि किन जाई

(हजारी प्रसाद द्विवेदी, कबीर पृ. 326 पद 1681)

मध्यकाल के संतों में कबीर की ही तरह नानक जी भी एक महान समाज सुधारक संत थे। उन्हाने कर्मकांडों के विरूद्ध विद्रोह प्रकट किया तथ उसकी सर्वोच्चता के गुणों से अवगत कराया। नानक जी ने एक आदर्ष समाज की स्थापना की। यहाँ पर हम गुरूनानक जी के समाजिक चिंतन पर विचार करेगें–

1. **बाह्य आडंबरो का विरोध** – नानक जी ने आडंबरों का विरोध किया । नौ वर्ष की आयु में उन्होनें जनेऊ धारण करने से मना कर दिया। वह कहते हैं–

दहिया कपाह संतोखु सूतु, जतु मंढी सत वटु।।
ऐहु जनेऊ जीअ का , हई न पाड़े घतु।।
न ऐहु तुटै, न मलु लगै, ना ऐहु जने न जाइ।।
धनु सु माणस नानका, जो गलि चले पाइ।।
तगु कपाहहु कतीअै, जो गलि चले पाइ।।
तगु सु माणस नानका, बामण वटे आइ।।
कुहि बकरा रिंनि खाहिया, सभु को आखै पाइ।।
होहि पुराणा सुटीअै भी फिरि पाईअै होरु।।
नानक तगु न तुटई, जो तगि होवै जोरु।।

(सलोक महला1,बार आसा पृ.471)

तात्पर्य यह है कि यज्ञोपवीत धारण करने से मनुष्य की आत्मा को किसी प्रकार का लाभ नहीं है, इसके स्थान पर तो मनुष्य को प्रभु प्यार तथा सदाचारक गुणों दया, संतो"ा, ऊँचे व निर्मल किरदार का मालिक बनना चाहिए, तो ही मनुष्य की आत्मा पवित्र होती है न कि इस धागे को शरीर में धारण करने से मनुष्य को मुक्ति मिलती है।

गुरुनानक जी ने अपने प्रचारक दौरों के माध्यम द्वारा एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाकर लोगों को बाह्य–आडंबरों को त्यागने का उपदेश दिया। उनका प्रथम प्रचारक दौरा हिंदू तीर्थों का सितम्बर 1507 तक, द्वितीय प्रचारक दौरा सुमरे पर्वत का सितम्बर 1517 से 1518 के अर्हकाल तक तथा तीसरा प्रचारक दौरा इसलामी धर्म स्थानों पर 1518 से 1512 तक रहा।

2.वर्ग भेद का अनौचित्य – गुरुनानक जी ने सुल्तानपुर के लोगों को प्रथम उपदेश दिया ''न को हिंदू न मुसलमान''। इसका तात्पर्य हे कि आप सभी लोग वर्ण–भेद का त्याग करो। इस संसार में न ही कोई हिंदु है और न ही कोई मुसलमान। सभी की रचना परमपिता परमात्मा ने की है। हमें आपस में भेदभाव का त्याग कर ऊँचें तथा निर्मल आध्यात्मिक और सदाचारक गुणों को अपनाना चाहिए।

नानक जी ने अपने प्रचारक दौरों के माध्यम से भी वर्ग भेद समाप्त करने का भरसक प्रयास किया । आपका मिशन तो सामाज में वर्ण भेद को नष्ट कर नीच जाति को ऊँचा बनाकर सभी मनु"यों में समानता लाना था।

नीचा अंदरि नीच जाति, नीची हू अति नीच।

नानक तिन के संगि साथि, बड़िआ सिडु किया रीस।।
जिथै नीच समालीअनि, तिथै नदरि तेरीह बखसीस।।
(बार सिरी राग, सलोक महला 1 पृ.15)

3.दलित जातियों में निर्भीकता को प्रोत्साहनः–

जिस समय गुरूनानक जी का आगमन हुआ उस समय देश की समाजिक दशा अत्यंत दयनीय थी। ब्राह्मण की वर्ण भेद नीति ने देश में निम्न जातियों को बहुत अपमानित किया। जाँति–पाँति के बने बंधनों के कारण नानक का हृदय बहुत दुःखी हुआ। गुरूनानक जी ने भी कबीर की तरह ही भारतीय जाँति–पाँति के बंधनों को तोड़कर समाज को एक सूत्र में बाँधनें का प्रयास किया। कबीर कहते है–

जाति पाति पूछे नहीं कोई।
हरि को भजै सो हरि का होई।।

तो नानक ने भी आगे बढ़कर इन सभी बंधनों को तोड़कर मानव की ही जाति बनाने का प्रयास किया। कबीर ने तो जाति प्रथा के लिए तीखा प्रहार किया परंतु नानक ने उसका पालन भी किया। उन्होंने मरदाना जो कि निम्न जाति का था उसे जीवन भर अपना साथी तथा आत्मीय बनाकर रखा।

नानक ने दलितों के उत्थान का प्रयास किया तथा उन्हें निर्भीकता से जीवन जीने की प्रेरणा दो। वे कहते हें कि हमारी सामाजिक अव्यवस्था जिसके कारण लोग नीचाई की सीमा तक पहुँचा दिये गये। जहाँ पर उन्हे दलित, हीन अपमानित तथा उपेक्षित किया गया। ऐसे लोगों कि निंदा करे हुए वे कहते हैं कि तुम अपने ऊपर परमात्मा की दया दृष्टिचाहते हो तो सर्वप्रथम निम्न लोगों को संभालो तथ उन्हे गले लगाकर ऊपर उठाओ न कि उनका अपमान करो।

4.नारी का सम्मान :–नानक जी के आगमन के समय 'ूद्रो की भाँति ही स्त्रियों की दशा दयनीय थी। यहाँ तक ब्राह्मणी धर्म पुस्तकों में भी स्त्रियों को दीन–हीन माना गया है। मनु महाराज जी कहते हैं–

''स्त्रियाँ मूर्ख हैं वेद मंत्रों से शून्य हैं तथा झूठ की मूर्ति है।

(मनु स्मृति अध्याय 5 सलोक 47–48)

इसी प्रकार कबीर दास जी ने भी कहा है –

नारी की झांई परत अंधा होत भुजंग।
कबीरा तिन की कौन गति जिन नारी के संग।।

जहाँ पर इन सब मतों का प्रचलन था वहाँ स्त्री को सम्माननीय कैस समझा जा सकता था ? वह तो पुरूषों की वासना पूर्ति का साधन मात्र थी। इन सब प्रचलित मान्यताओं का नानक जी ने कड़ा विरोध किया। इन्होनें अपनी वाणी के माध्यम से कहा–

भंडि जमिए भंडि निभीऐ, भंडि भंगणु वीआहु
भंडहु होवे दोसती भंडहु चलै राहु।
भंडु हुआ भंडु भीलिये भंडि, होवै बंधानु
सो किए मंदा आरवीऐ जितु जंमहि राजनु
(वार आसा, महला पृ.473)

नानक जी कहते हैं कि स्त्री मात्र पुरूषों की काम–पिपासा को संतु"ट करने का साधन नहीं है बल्कि वह तो सम्माननीय है। उसने योगियों, तपियों, शूरवीरों, राजाओं को जन्म दिया है। उसी के कारण यह सृष्टि बनी है। सच्चा धर्म लिंग – भेद को कभी भी स्वीकार नहीं करता हैं वाहिगुरू की दृष्टि में सभी स्त्री तथा पुरूष बराबर स्थान रखते हैं। इसलिए सभी प्राणियों में हमें समानता रखना चाहिए। तभी हम एक आदर्श जीवन स्थापित कर सकते हैं।

नानक जी की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता थी कि उन्होनें गृहस्थ जीवन को सर्वोपरि माना तथा नारी को समाज और परिवार में श्रेष्ठ स्थान प्रदान करने की कोषिष की । नानक जी ने कहा है कि जब समाज में स्त्री तथा पुरूष का समान दर्जा होता है तभी आदर्श समाज को स्थापना हो सकती है। नारी पुरूष की सहभागिनी है तथा उसका स्थान भी अक्षुण्ण है।

5.धन का समान विवरण :–गुरुनानक जी एक ऐसे समाज का निर्माण करना चाहते थे जहाँ पर कोई अमीर तथा कोई गरीब न हो। वह सबको समान रूप में देखना चाहते थे। नानक का सोचना था कि जिस समाज में रुपये–पैसे का समान वितरण नहीं होता है वह समाज हमेषा गरीबी, बीमारी, भुखमरी का षिकार होता है। दरिद्र व्यक्ति पशुओं की भाँति अपना जीवन व्यतीत करता है। रोटी, कपड़ा मकान पाने को लालसा में वह अपना सारा जीवन नष्ट कर देता है। उसके पास इतना समय भी नहीं रहता कि वह ईश्वर को याद कर सके। अमीर व्यक्ति के पास सब कुछ होने के कारण वह बाहरी पाखंडो तथा अहंकार में ही व्यस्त रहता है। इस प्रकार हमारे समाज में गरीब अमीर दो वर्गों में बँटने के कारण एक सुंदर स्वच्छ समाज का निर्माण नहीं हो सकता।

6.अवतारवाद का खंडन तथा निर्गुब्रह्म के उपासक

कबीर की तरह नानक भी निर्णुणब्रह्म के उपासक थे। दोनों ही ने न तो अवतारवद में, न मूर्तिपूजा, न ही तीर्थ यात्रा और न ही ब्राह्मचर्यों के प्रति आस्था दिखाई। हाँ उनकी साधना प्रणाली में ब्रह्म को निराकार, अव्यक्त अगोचर माना है। दोनों मध्यकालीन संत ने राम नाम का सहारा तो अवष्य लिया है परंतु दोनों ने दशरथ के पुत्र राजा–राम का नहीं अपितु निगुर्ण बह्म के विषय में कहा है । उन्हानें अपनी वाणी में ब्रह्म को राम, केशव, माधव, शून्य निरंजन आदि नाम से संबंधित किया है, कबीर ने निगुर्ण ब्रह्म के लिए कहा है–

''दुलहिन गावहुँ मंगलाचार हम घर आए राजा राम भरतार।''

इसी प्रकार नानक ने भी निगुर्ण ब्रह्म के लिए कहा है–

हम हरि साजन आए, साचे मेलि मिलाए।।
सहजि मिलाए हरि मन भाजे सुखु पाइआ।
हम घरि साजन आए, साये मेलि मिलाए।।
सहजि मिलाए हरि मनि भाजे पंच मिले सुखु पाइआ।

कबीर तथा नानक दोनों ने ही आत्मा को स्त्री तथा परमात्मा को पति कहा हैं कबीर की भक्ति का मूलाधार–प्रेम था। भगवत् प्रेम पर उनकी दृष्टि इतनी दृढ़– निबद्ध थी कि इस ढाई अक्षर (प्रेम) को, ही वे प्रधान मानते थे। नानक आध्यात्मिक पथ प्रदर्षक एवं समन्वयवादी विचारक थे। उनका उद्देश्य ईश्वर प्राप्ति ही

था और उसी 'वाहिगुरू' की प्राप्ति का मार्ग उनकी भक्ति का ही मार्ग था।

कबीर एवं गुरूनानक की मत भिन्न्ता –

कबीर एवं गुरूनानक में विचारों की समानता के साथ–साथ मत भिन्नता भी मिलती है। दोनों ही संत–परंपरा की अन्यतम विभूतियाँ हैं, परंतु दोनों में कितना महान अंतर है कबीर का स्वभाव अत्यंत तेजस्वी और उग्र है, नानक का शांत और मृदु। कबीर बार–बार व्यंग्य का प्रयोग करते हैं जबकि नानक प्रेम की सहज वाणी के माध्यम स ही अपना मन्तव्य व्यक्त करते हैं। कबीर को ज्ञान का बल है, नानक को केवल भक्ति का संबल प्राप्त है। इसलिए कबीर तर्क का आश्रय लेते हैं जबकि नानक का माध्यम केवल अनुभव है। कबीर का मार्ग आदेश और उपदेश का मार्ग है परंतु नानक आत्मीय भाव से परामर्श देते हैं। परिणामतः कबीर का प्रभाव जहाँ अधिक प्रखर और तीव्र था, वहाँ नानक का प्रभाव अधिक व्यापक और स्थाई सिद्ध हुआ। दोनों संतों की मत भिन्नता का मूल्यांकन निम्न रूपों में किा जा सकता है–

1. वर्ग भेद का प्रभाव– शिक्षा का प्रभावः– नानक जी जाति से खत्री थे। यह एक सम्मानित जाति थी । उनके परिवार को आदर्श परिवार माना जाता था। इसके विपरीत कबीर जी जुलाहा थे जिनकी जाति निम्न थी तथा परिवार दीन–हीन था । इस कारण से उनका बचपन आभावों में व्यतीत हुआ। यही कारण था जिससे कबीर को शिक्षा से भी वंचित रहना पड़ा। परंतु नानक जी पाठशाला गए। अपनी कार्यक्षमता, उत्तरदायित्व से उन्होनें गुरू से अल्पकाल मं ही सारी विधाएँ प्राप्त कर ली थी। एक दिन उन्हानें वर्णमाला के सभी अक्षरों (अ,आ, ...क, एवं ख.....) के आध्यात्मिक अर्थो को प्रकट कर अपने गुरू (पांधा जी) का आश्चर्य चकित कर दिया था। यह वर्णन आसा राग में संग्रहित है। गुरुनानक ने पंडित ब्रजनाथ से शिक्षा प्राप्त की । इन्होनें अपनी विलक्षण बुद्धि के कारण सबको आश्चर्य में डाल दिया। नानक ने फारसी का ज्ञान मुल्ला जी से प्राप्त किया। अपने गुरु मुल्ला साहब को परमात्मा की भक्ति की शिक्षा दी एव उनके पास जाना बंद कर दिया। निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि नानक जी को पंजाबी, संस्कृत, फारसी आदि भाषाओं का ज्ञान था। उन्हाने अपने जीवन में अनेक सम्प्रदाय के पंडितों, दार्शनिकों, विद्वानों, मुल्लाओं से भी शास्त्रार्थ किया। नानक जी अलौकिक प्रतिभाषाली तर्कशक्ति के धनी थे।

2. भाषा की तीक्ष्णता – क्रांतिकारी कबीर तथा शांतिप्रिय नानक– नानक की जीवनी का अध्ययन करने पर यह बात हमारे सामने आती है कि नानक जी का स्वभाव मृदु, कोमल, सरस था। उनकी वाणी में कोमलता तथ सरलता झलकती थी। नानक जी दयालु प्रकृति के थे।

नानक जी की दयालुता का कारण समझे तो हम यह कह सकते हैं कि नानक जिस कुल में जन्म लिये थे वह सामाजिक तथा आर्थिक दोनों ही दृष्टिसे उच्च तथा सम्मानीय समझा जाता था। यही कारण था कि नानक जी को मनोवैज्ञानिक दृष्टि से उन परिस्थितियों का सामना नहों करना पड़ा जो कबीर को करना पड़ा। कबीर का क्रांतिकारी रूख होन का सबसे बड़ा कारण यह था कि कबीर जुलाहा थे तथा उन्हे निम्न जाति का समझा जाता था। दोनों संतो के आगमन के समय जाँति–पाँति का बोलबाला थ। वर्ग भेद के विभाजनों के कारण निम्न श्रेणी के लोगा को उस समय की विषम परिस्थितियों का सामना करना पड़ा। उनकी आर्थिक स्थिति डॉवाडोल थी तथा आसपास का दूषित वातावरण उनके जीवन में आक्रोष पैदा करता है। तभी तो उन्होने जो जीवन अपनी आँखों से देखा तथा भोगा उस पर उन्हानें सीधा तीखा प्रहार किया । समाज में व्याप्त कुरितियाँ, आडंबर, मिथ्याचार, पापाचार देखकर उनका हृदय दहल उठा तथा उनका क्रोध अंगार की भाँति फूट पड़ा इसके परिणाम स्वरूप कबीर का क्रांतिकारी स्वरूप हमारे समक्ष दृष्टिगोचर होता हैं । उन्हें उपेक्षा एवं अपमान सहना पड़ा। वह रामानंद जी को अपना गरू बनाना चाहते थे पर उन्होनें भी कबीर (निम्न श्रेणी के कारण) को तिरष्कृत किया। शायद यही कारण था कि कबीर की वाणी में तीखी उक्तियाँ है जबकि नानक की वाणी कोमल है।

वर्तमान युग में कबीरदास एवं गुरूनानक की प्रासंगिकता –दोनों ही संत आज के वातावरण में बहुत प्रासंगिक हैं, क्योंकि आज की परिस्थितियाँ भले ही समाज के अनुरूप बदली हो लेकिन उसकी प्रवृत्तियाँ वहीं हैं जो इन संतो के समय थी। परंतु दुर्भाग्य यह है कि आज कोई कबीर नानक नहीं है। दोनों संतो की वाणी को अपने आचरण और कर्म में साकार करने वाले बहुत मिलते हैं। ''कबीर की तरह नानक ने भी आगाह किया था कि प्रेम का खेल बड़ा कठिन है। मगर आज तो सब कुछ दाँव पर लगाकर खेलना होगा क्योंकि बिना यह दायित्व निभाए इस देश का और हमारा अस्तित्व ही नहीं निभ पाएगा। आज की पहली जरूरत प्रेम के मार्ग पर पैर रखना और बिना संकोच के सिर देना है क्योंकि बिना प्रेम में डूबे निभने और निभाने के कोई अर्थ रहते है'' ।[1]

कबीर के सिद्धांतों पर कबीर पंथ तथा नानक के सिद्धांतों पर सिख पंथ की स्थापना हुई। दोनों की पंथ का भारतीय जनमानस पर गहरा प्रभाव पड़ा है। कबीर पंथ के अनुयायी मध्यप्रदेश में मंडला, अमरकंटक, कबीर चबूतरा, डिण्डौरी, कुदुरमाल, रतनपुर (छ.ग.) दुर्ग (छ.ग.) भिलाई (छ. ग.) शिवपुरी, धमतरी (छ.ग.) आदि प्रधान क्षेत्रों में है। इसके अलावा गुजरात, अहमदाबाद बड़ौदा, राजस्थान, पंजाब, बैंगलोर आदि सभी स्थानों पर भी पंथ का प्रभाव है। कबीर जी का सबसे बड़ा मंदिर काशी बनारस में है जिसको कबीर चौरा कहा जाता है।

नानक जी के सिद्धांतों का भी भारतीय जनमानस पर गहरा प्रभाव पड़ा। उनके सिद्धांतों के अनुरूप ही लंगर प्रथा का प्रचलन आज भी है। सिख धर्म के अनुयायी पूरे भारत व"ा में फैले हुए हैं इसके अतिरिक्त अमेरिका ग्रेट ब्रिटेन तथा विश्व के अनेक देशां में सिखपंथ के अनुयायी पाये जाते हैं। जिन्हे सिख कहा जाता है। स्थान–स्थान पर गुरूद्वारे (अर्थात् गुरू का घर) बने हुए है। जहाँ पर सभी धर्म के लोग जा सकते हैं। नानक जी तथा दशम गुरु के नाम पर अनेक उच्चतर माध्यमिक 'ाला तथा महाविद्यालय बने हुए हैं। इन उच्चतर माध्यमिक शालाओं तथा महाविद्यालय में सिख धर्म के ही नहीं अपुित हर धर्म के लोग विद्याध्यन कर सकते हैं। वर्तमान में भी इन धर्म गुरूओं को याद किया जाता है तथा उनकी जयंती पर लंगर, कीर्तन, प्रभात फेरी का आयोजन किया जाता है।

वर्तमान युग की इन समस्याओं, अलगाववाद, उपभोक्तावाद, जातिवाद, समाजवाद, द्वेषता, साम्प्रदायिक, विद्वे"ा धार्मिक आडंबर आदि से मुक्ति के लिए दोनों ही संतों के ज्ञान के प्रकाश की आवश्यकता है। दोनों ही संतों ने वर्ण–जाति, धर्म के महासंगम, इस देश की प्रमुख जटिल समस्याओं का समाधान प्रस्तुत किया, जिसका महत्व आज भी अक्षुण्य है। भारतीय संविधान में जिस सर्वधर्म की परिकल्पना की गई, उनके मूल स्त्रोत ये ही संत कवि है। उक्त संतों की विचारधारा को गहराई से समझने की आज भी आवश्यकता ह, जिसमें साहित्य और समाज को नई दिशा, मिलेगी।

संदर्भ

1. कबीर ग्रंथावली, डॉ. श्यामसुंदर दास नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी।
2. कबीर ग्रंथावली, माता प्रसाद गुप्त, साहित्य भवन प्राइवेट लिमिटेड इलाहाबाद
3. श्री गुरुनानक देव जी की जन्म साखी, भाई वाले वाली भाई, चतर सिंह जीवन सिंह अमृतसर।
4. कबीरय आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन दिल्ली 6
5. कबीर परम्परा (गुजरात के संदर्भ में), डॉ. कांतिकुमार भट्ट, साहित्यरत्न, अभिनव भारती, इलाहाबाद –3
6. कबीर की विचारधारा, डॉ. गोविन्द त्रिगुणायत एम.ए.पी. एच.डी. मुरादाबाद
7. मध्यकालीन संत साहित्यय डॉ. राम खेलावन पाण्डेय, हिंदी प्रचारक पुस्तकालय वाराणसी।
8. भक्त कबीर जीय भाई चतुर सिंघ, जीवन सिंघ अमृतसर।
9. गुरुनानक देवय डॉ. जयराम मिश्रा
10. कबीरय विजयेन्द्र स्नातकय राधाकृष्ण प्रकाशन 1965, दिल्ली।
11. आसा दी वार सटोकय टीकाकार प्रो. साहिब सिंघ, सिंघ ब्रदर्ज बाजार माई सेवा अमृतसर
12. जीवन यात्रा तथा सिद्धात गुरूनानक देव जी, कृपाल सिंघ 'चंदन अनुवाद स. कुलबीर सिंघ, सिख मिशनरी कॉलेज (रजि) लुधियाना–8 ।
13. हिन्दी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचनन्द्र शुक्ल, नागरी पचारणो सभा काशी।
14. संत कबीर, डॉ. रामकुमार वर्मा साहित्य भवन, इलाहाबाद
15. कबीर मीमांसा, डॉ. रामचन्द्र तिवारी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
16. सन्त कबीर, वीरेन्द्र सेठी की अंग्रेजी पुस्तक कबीर दि वीवर ऑफ गॉड्स नेम एस.एल सोंधी, सेक्रेटरी के आधार पर श्रीमती शान्ति सेठी डेरी बाबा जेमलसिंह, राधास्वामी सत्संग व्यास, जिला अमृतसर (पंजाब)
17. अंधेरे के आलोक पुत्र, नर्मदा प्रसाद उपाध्याय प्रथम संस्करण 1994 श्री बेनीमाध प्रकाषन, हरदा जिला होशंगाबाद (म.प्र.)
18. क्रांतिकारी महामानव गुरुनानाक देवय जसवीर सिंघ भुवनवाणी ट्रस्ट लखनऊ प्रथम संस्मरण 226020 प्रथम संस्करण 2000
19. श्री गुरू ग्रंथ दर्शन, डॉ. जयराम मिश्र साहित्य भवन प्राईवेट लिमिटेड इलाहाबाद प्रथम संस्करण 1960
20. वचित्र जीवन श्री गुरूनानक देव जीय सोढी तेजा सिंह भाई चतर सिंघ, जीवन सिंध, अमृतसर।
21. गुरुनानक का रूहानी उपदेश, जे आर.पुरी राधास्वामी सत्संग व्यास, अमृतसर
22. सप्तसिंन्धु नानक वाणी, डॉ. रमेषचन्द्र, मिश्र, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय प्रथम संस्करण 1995
23. आदिग्रंथ, डॉ. मोहन सिंह ।
24. आदिग्रन्थ, श्री गुरुग्रंथ साहित, प्रकाश भाई जवाहर सिंह कृपाल सिंह एन्ड को अमृतसर ।